GOVT. DEGREE COLLEGE BHOJPUR MORADABAD

Name, **Madhu Tyagi**, Art Professor History

E.Mail, madhutyagi881@gmail.com

Stream, Arts

Name of Course, B.A. III

Name of Sub, History Paper I, Unit-I History of Modern India

Name of Topic, मराठा सिक्ख, जाट, मैसूर, राजपूत, केरल

Meta-data- **Political Condition of India in the 18th Century**

Type, PDF Text

घोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित प्रसारित या साझा नहीं करेंगे ओर इसका व्यक्तित्व ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस ई–कन्टेन्ट में जो जानकारी की गयी है। वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

मराठा सिक्ख, जाट, मैसूर, राजपूत, केरल

क्षेत्रीय राज्य–

क्षेत्रीय राज्यों का दूसरा समूह **'नये राज्यों'** या **'विद्रोही राज्यों'** का या जिसकी स्थापना मराठों, सिक्खों, जाटों ने मुगलों विरूद्ध विद्रोह करके की।

मराठा– इस काल में उभरने वाले प्रांतीय राज्यों में मराठा राज्य का स्थान प्रमुख है। मराठों का उदय एक तरफ मुगल केन्द्रीकरण के विरूद्ध क्षेत्रीय प्रतिक्रिया का परिणाम थी तो दूसरी ओर यह विशेष वर्गों और जातियों की उच्च वर्गों में अपने उच्चस्थ बढ़ोतरी की इच्छा का परिणाम। मराठा राज्य व्यवस्था की मुख्य विशेषता पेशवाओं या प्रधानमंत्रियों का आधिपत्य था जिसका विकास बालाजी विश्वनाथ के शासनकाल के दौरान हुआ। ये शिवाजी के पौत्र साहू का एक वफादार अधिकारी था। 1707 ई० में साहू को मुगलों के द्वारा जेल से छोड़ दिया गया और वह मराठा राज्य के राजा बने। इसके शासन के दौरान पेशवा की शक्ति का तेजी से विकास हुआ और मराठा सम्राट नाम मात्र के रह गये।

बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद उसके पुत्र बाजीराव (1702 से 1740) पेशवा बने और इस समय मराठा क्षेत्रीय शक्ति न होकर एक विस्तारवादी साम्राज्य बन गया था। 1740 से 1761 तक बालाजी बाजीराव, जिनको नाना साहेब भी कहा जाता है, पेशवा बने। इस समय मराठा शक्ति अपने चर्मोत्कृष पर पहुँच गयी। मराठे उत्तर, दक्षिण, पूर्व और मध्य भारत में चारों ओर फैल गये। पानीपत की तीसरे युद्ध में 1761 ई० में अफगानों के द्वारा मराठों की हार ने उनके विजय अभियान पर रोक लगा दी। इय युद्ध से अफगानों की अपेक्षा अंग्रेजों को लाभ हुआ। उन्हें बंगाल और भारत में अपना प्रभाव बढ़ाने के व्यापक अवसर प्राप्त हो गया।

1761 में माधवराव पेशवा बने लेकिन 1772 ई० में असमय मृत्यु से मराठों का सपना निर्णायक रूप से समाप्त कर दिया।

अंग्रेजों के हाथों प्रथम ऐंग्लों–मराठा युद्ध में मराठों की पराजय में शक्ति के लिये होने वाले मराठा युद्धों के षड़यन्त्रों एवं संघर्षों को भी स्पष्ट कर दिया।

प्रशासनिक दृष्टि से पूरा क्षेत्र नियन्त्रित और गैर नियन्त्रित इलाकों में बँटा था। गैर–नियन्त्रित इलाकों में जमींदारों और सरदारों को प्रशासन चलाने की छूट थी लेकिन साथ ही उन्हें पेशवा को नियमित नजराना पेश करना होता था। नियन्त्रित इलाकों पर मराठों का प्रत्यक्ष नियन्त्रण था। इन इलाकों में भू राजस्व के मूल्यांकन, प्रबन्धन और वसूली व्यवस्था का विकास किया गया। मराठों ने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के कुछ हिस्सों को अपनाया। उनकी प्रशासकीय व वित्तीय कमजोरियों विशेषतः सैन्य क्षेत्र में जैसे तकनीकी पिछड़ेपन, तोपखाना, कठोर बन्दूकें और उन्नत अग्नि हथियारों को नहीं अपनाया जिसके परिणामस्वरूप उनकी पराजय हुई।

सिक्ख– 15वीं शताब्दी के अन्त में नये लोकतान्त्रिक धर्म सिक्खवाद का प्रसार सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण पंजाब प्रान्त में हुआ। आरम्भ में यह धार्मिक विश्वासों में सुधार और सिक्ख समुदाय में बंधुत्व की भावना को मजबूत करने तक सीमित था पर 18वीं शताब्दी के दौरान यह राजनैतिक आन्दोलन में बदल गया। गुरू गोविन्द सिंह की हत्या के बाद सिखों का नेतृत्व बंदा बहादुर के हाथों में आ गया लेकिन फरूखसियर के द्वारा उसे पकड़ने और हत्या करने के बाद सिक्खों ने हार नहीं मानी। वे अपने आपको संगठित करते रहे। नादिरशाह और अहमदशाह के आक्रमणों से उत्पन्न अवयवस्था का लाभ उठाकर सिखों ने पंजाब में अपनी स्थिति सुदृढ़ की। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विभिन्न सिखों समुदायों ने कई स्थानीय सरदारों के नेतृत्व में अपने को 12 मिस्लों या संघों में गठित किया। 19वीं

शताब्दी के आरम्भ में रंजीत सिंह के नेतृत्व में एक स्वायत्त सिख राज्य की स्थापना की प्रक्रिया पूरी हुई।

जाट– राजपूत और सिखों की तरह जाटों ने भी भरतपुर में अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की। जाटों का नेता चूड़ामन जिसने औरंगजेब के अन्तिम दिनों में जाटों को संगठित कर उसने दिल्ली और आगरा के निकटवर्ती इलाकों में अव्यवस्था फैला दी। फरूखसियर ने इसे रोकने का प्रयास किया लेकिन चूड़ामन के पुत्र वदन सिंह ने आगरा और मथुरा में स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की और उसके कार्य को सूरजमल ने और आगे बढ़ाया। जाटों का राज्य पूर्व में गंगा; दक्षिण में चम्बल, उत्तर में दिल्ली और पश्चिम में आगरा तक फैला हुआ था। अब्दाली के आक्रमण के समय जाट तटस्थ रहे और मराठों के पतन के बाद उत्तरी भारत में उनकी शक्ति और अधिक बढ़ गई। इनके राज्य की प्रकृति सामंती थी और प्रशासनिक तथा राजस्व मामलों पर जमींदारों का पूर्ण नियन्त्रण था।

राज्यों की तीसरी श्रेणी में स्वतन्त्र राज्यों का है जिसका उदय केन्द्रीय सत्ता के कमजोर होने और क्षेत्रीय राज्यों पर इनकी पकड़ ढीली होने के कारण हुआ। मैसूर, राजपूत राज्य एवं केरल इस श्रेणी के राज्य थे।

मैसूर– मैसूर राज्य हैदराबाद के दक्षिण में स्थित है। जो पहले विजयनगर साम्राज्य का अधीनस्थ राज्य था। 18वीं शताब्दी में हैदर अली ने बोडियार वंश को पदच्युत कर मैसूर में स्वायत्तता राज्य की स्थापना की। हैदर अली जो कुशल सेना नायक था।उसने मराठे, कर्नाटक, हैदराबाद और अंग्रेजों के संकट से निपटने के लिए एक आधुनिक सेना के महत्व को ठीक से पहचाना और यूरोपीय सेना के ढंग पर मैसूर की सेना का आधुनिकीकरण किया। उसने मैसूर की सीमा का विस्तार किया और मराठों, हैदराबाद और अंग्रेजों की

दुश्मनी मोल ली। 1782 में उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र टीपू सुल्तान ने अपने पिता के संघर्ष को जारी रखा।

राजपूत राज्य– मुगल साम्राज्य के बिखराव से राजपूत राजाओं ने लाभ उठाते हुए अपनी स्थिति को अन्य शासकों की तरह मजबूत किया। दिल्ली दरबार में सत्ता के लिए होने वाले संघर्षों और षडयन्त्रों में उन्होंने भाग लेकर आकर्षक और प्रभावशाली सूबेदारियाँ प्राप्त की।राजपूतों ने प्रसारवादी नीति का अनुसरण करते हुए अपने कमजोर पडोसी को अपने राज्य में मिला लेते। मेवाड, मारवाड और अजमेर जैसे राजपूत राज्यों ने मुगल साम्राज्य के खिलाफ गठबन्धन कर लिया। राजपूत शासकों में अजमेर का राजा जय सिंह और जोधपुर के अजीत सिंह सर्वप्रमुख हैं।

केरल– 18वीं शताब्दी के आरम्भ में केरल स्थानीय सरदारों और राजाओं के अधीन छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त था। हैदर अली की विस्तारवादी नीति के कारण केरल का मालाबार और कालीकट मैसूर में चला गया। ट्रावणकोर के राजा मार्तण्ड वर्मा ने पश्चिमी तरीकों से प्रशिक्षित और आधुनिक हथियारों से लैस सेना की मदद से अपने राज्य की सीमाओं का प्रसार किया। डचों को केरल से बाहर तथा सामंत सरदारों का दमन कर दिया गया। इसके उत्तराधिकारी राम वर्मा जो बहुत विद्वान और महान रचनाकार थे, उनके शासनकाल में राजधानी त्रिवेन्द्रम विद्वता तथा कला का केन्द्र बन गई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बी० एल० ग्रोवर, यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, पृ० 8, 9 एस० चन्द एंड कम्पनी प्रा० लि० रामनगर नई दिल्ली
2. एस० के पाण्डे, आधुनिक भारत पृ० 37 से 56 संस्करण 2012, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स, इलाहाबाद